



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (II)  
PART II—Section 3—Sub-Section (II)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 671]

नई दिल्ली, शुक्रवार, दिसम्बर 1, 1995/अग्रहायण 10, 1917

No. 671]

NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 1, 1995/AGRAHAYANA 10, 1917

वाणिज्य मंत्रालय

अधिसूचना संख्या: 12 (आर ई-95)/92-97

नई दिल्ली, 1 दिसम्बर, 1995

का.आ. 948 (अ):—विदेश व्यापार (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1992, (1992 की संख्या 22) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए केन्द्र सरकार एतद्वारा निर्यात और आयात नीति, 92-97 (संशोधित संस्करण: मार्च, 1995) के अध्याय-8 में निम्नलिखित संशोधन करती है:—

(1) पैराग्राफ 79 के बाद निम्नलिखित पैरा जोड़ा जाएगा:—

79.क "डायमंड क्रेडिट बुक स्कीम —कट और पालिशड डायमंड के निर्यातकों की कुछ श्रेणियों हेतु डायमंड क्रेडिट बुक स्कीम उपलब्ध होंगी। स्कीम स्वैच्छिक होगी। निर्यातक, जो डीटीसी साइट के नियमित धारक हैं अथवा वे जिन्होंने कट और पालिशड डायमंड का विगत तीन वर्षों में न्यूनतम निर्यात निष्पादन औसतन तीन करोड़ रुपए का निर्यात कारोबार किया है वे स्कीम का उपयोग करने के पात्र होंगे। ऐसे निर्यातक

क्रेडिट बुक जारी करने के लिए नामित प्राधिकारी को निर्धारित फार्म में आवेदन कर सकते हैं। नामित प्राधिकारी विनिर्दिष्ट किए अनुसार ऐसे मामलों पर विचार करने के बाद आवेदक को क्रेडिट बुक जारी कर सकता है।

महानिदेशक, विदेश व्यापार दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और बम्बई के प्रत्येक सीमाशुल्क सदन तथा इस बारे उनके द्वारा विनिर्दिष्ट ऐसे अन्य सीमाशुल्क सदनों में नामित प्राधिकारी को पदनामित करेंगे जो उप महानिदेशक के स्तर से नीचे का नहीं होगा। नामित प्राधिकारी क्रेडिट बुक स्कीम से संबंधित मामलों के बारे में सक्षम प्राधिकारी होगा तथा सीमाशुल्क समाहर्ता की देख रेख और सम्पूर्ण निर्देशों के तहत अपना कार्य करेगा।

निर्यात करने और वीजक की सीमाशुल्क सत्यापित प्रति प्रस्तुत करने तथा कट और पालिशड डायमंड के निर्यात लाभों की प्राप्ति हेतु इंतजार किए बिना, नामित प्राधिकारी परिशिष्ट 1 में दी गई प्रतिपूर्ति दरों के आधार पर आयात हेतु हकदारी का निर्धारण करेगा तथा क्रेडिट बुक में आवश्यक क्रेडिट प्रविष्टियां करेगा। परिशिष्ट-1 के अनुसार वस्तुओं के

आयात हेतु ऐसी ही क्रेडिट बुकों के धारकों के बीच ये क्रेडिट हस्तांतरणीय होंगे तथा नामित प्राधिकारी क्रेडिट बुक में आवश्यक डेबिट/क्रेडिट प्रविष्टियां करेगा।

आयात और निर्यात एक ही पतन के माध्यम से किया जाएगा। क्रेडिट बुक जारी होने के 6 महीनों की अवधि के लिए वैध होगी तथा क्रेडिट बुक की वैधता समाप्त होने के बाद निर्यातकों के क्रेडिट में पड़े शेष को अगली क्रेडिट बुक में ले जाने की अनुमति होगी।”

(2) पैराग्राफ 88 अपने हाशिया शीर्ष के साथ निम्नलिखित द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा:—

88. “सामान्य: मुख्य संयोजन की गणना स्वर्ण/प्लेटिनम और चांदी अंश (कचरे समेत) के मूल्य के संदर्भ में की जाएगी। प्लेन स्वर्ण/प्लेटिनम आभूषणों और वस्तुओं हेतु न्यूनतम मूल्य संयोजन 10% होगा, जड़ित स्वर्ण/प्लेटिनम आभूषणों और वस्तुओं के लिए 15% तथा चांदी के आभूषणों और वस्तुओं के लिए 25% होगा।

(क) एमएमटीसी, एच एच ई सी अथवा भारत सरकार द्वारा नामित किसी अन्य सार्वजनिक क्षेत्र की एजेंसी के माध्यम से विदेशी क्रेता द्वारा आपूर्ति किए गए स्वर्ण/चांदी के मद्दे आभूषणों का निर्माण और निर्यात: उन मामलों में जहां विदेशी क्रेता द्वारा एम एम टीसी/एचएचईसी अथवा भारत सरकार द्वारा नामित किसी अन्य एजेंसी को निर्यात आर्डर दिए गए हों, विदेशी क्रेता, अग्रिम तौर पर, स्वर्ण और चांदी के आभूषणों और वस्तुओं के निर्माण व अंतिम निर्यात के लिए स्वर्ण और चांदी की निःशुल्क आपूर्ति कर सकता है। एलाय चांदी और 18 कैरेट और उससे कम के स्वर्ण की फाइनिंग्स और माउन्टिंग्स की भी आपूर्ति की जा सकती है। एमएमटीसी/एचएचईसी अथवा नामित एजेंसी द्वारा सीधे अथवा सहयोगियों के माध्यम से निर्यात किया जा सकता है। माउन्टिंग्स और फाइनिंग्स का आयात और निर्यात नेट मे नेट आधार पर किया जाएगा।

(ख) प्रदर्शनियों में प्रदर्शन/बिक्री हेतु निर्यात:

जैम और ज्वेलरी ईपीसी, एचएचईसी और एमएमटीसी और उनके सहयोगी विदेशों में होने वाली प्रदर्शनियों के लिए स्वर्ण/प्लेटिनम/चांदी के आभूषणों और वस्तुओं का निर्यात कर सकते हैं। कोई अन्य व्यक्ति/फर्म/कंपनी को भी जैम और ज्वेलरी ईपीसी का अनुमोदन प्राप्त करने के बाद इस प्रावधान के तहत निर्यात की अनुमति दी जा सकती है। उपरोक्त निर्यातों को निम्नलिखित शर्तों के अधीन किया जाएगा:—

(1) विदेश में नहीं बेची गई वस्तुओं को प्रदर्शनियों के समाप्त होने के 45 दिनों के भीतर पुनः आयात किया जाएगा।

(2) ऐसी प्रदर्शनियों में बिक्री हुई मद्दों पर सोना/प्लेटिनम और चांदी तत्व प्रतिपूर्ति के रूप में प्रदर्शनी बंद होने के 60 दिनों के अंदर, आयात कर लिए जाएंगे। एक ई ओ यू/ई पी जैड यूनिट भी भारत/विदेश में प्रदर्शनियों में

भाग ले सकती है। फिर भी देश में की गई प्रदर्शनियों में बिक्री की अनुमति नहीं होगी। इन इकाइयों से आभूषण के संचालन के लिए प्रक्रिया तथा वापसी सीमाशुल्क प्राधिकारियों द्वारा निर्धारित की जाएगी।

ग. सोना और चांदी जेवरों और वस्तुओं की निर्यात संवर्धन और प्रतिभूति स्कीम: निर्यातक निर्यातों के बाद भारतीय स्टेट बैंक/खनिज एवं धातु व्यापार निगम/एचएचई.सी द्वारा सोना/चांदी अग्रिम या प्रतिपूर्ति के रूप में प्राप्त कर सकता है। प्लेटिनम, जेवरों और वस्तुओं के संबंध में जेवरों निर्यातकों को आपूर्ति के लिए 0.999 शुद्धता तक के प्लेटिनम की आपूर्ति और आयात के लिए नामित एजेंसी केवल खनिज एवं धातु व्यापार निगम होगी।

घ. अग्रिम लाइसेंस: शुल्क मुक्त आयात के लिए एक मात्रा आधारित अग्रिम लाइसेंस दिया जा सकता है:

- (1) गोल्ड माउन्टिंग्स, साकेट्स, फ्रेम्स और 18 कैरेट तथा कम की फाइनिंग्स; और
- (2) सोना और चांदी जेवरों और वस्तुओं के आयात के मद्दे चांदी, माउन्टिंग्स, साकेट्स, फ्रेम्स और फाइनिंग्स। एक विशेष लाइसेंस के मद्दे आयात की तिथि से 120 दिन के भीतर निर्यात आभार को पूर्ण किया जाना अपेक्षित होगा।

ड. ई पी जैड/ई.ओ.यू. यूनिटों से निर्यात: नीति के अध्याय-9 में सामान्य प्रावधान रत्न तथा जेवरों ई ओ यू तथा ई पी जैड यूनिटों पर लागू होंगे, निम्नलिखित को छोड़कर

- (1) रिजेक्ट्स सहित किसी को भी बिक्री की अनुमति घरेलू टैरिफ क्षेत्र (डी टी.ए.) में नहीं मिलेगी;
- (2) यदि कोई यूनिट कार्य करना बंद कर देती है, तो सोना और दूसरी कीमती धातु एलाय. रत्न और अन्य सामग्री जो जेवरों के विनिर्माण के लिए उपलब्ध होता वाणिज्य मंत्रालय द्वारा नामित किसी एजेंसी को एजेंसी द्वारा निर्धारित की गई कीमत पर सौंप दिया जाएगा।

ये यूनिट स्वर्ण और अन्य बहुमूल्य धातुओं से विनिर्मित कच्चे सोने, एलाय, कैरेट स्वर्ण, कीमती धातु जिसमें चांदी 0.90 शुद्धता तक के प्लेटिनम और पेलैडियम, फाइनिंग्स माउन्टिंग्स, साकेट और फ्रेम भी शामिल हैं, का आयात कर सकती हैं। ये यूनिटें हीरों, रंगीन रत्न और पत्थरों, अर्ध-मूल्यवान पत्थरों, सिन्थेटिक पत्थरों, मोतियों, आदि का भी आयात कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त इन यूनिटों का भारतीय स्टेट बैंक, खनिज एवं धातु व्यापार निगम या वाणिज्य मंत्रालय द्वारा नामित किसी अन्य एजेंसी के जरिए स्वर्ण, जिसकी शुद्धता 0.995 से कम न हो भी उपयुक्त कराया जा सकता है। स्वर्ण, जिसकी शुद्धता 0.995 से कम न हो कि आपूर्ति के लिए, यदि कोई हो, यूनिटें निर्यात संसाधन क्षेत्र/निर्यात अभिमुख यूनिट के लिए विकास आयुक्त अथवा

निर्यात अभिमुख यूनिट परिसर के प्रायोजित प्राधिकारी के जरिए आवेदन कर सकती है।

एक निर्यातक को तराशे और पालिश किए गए हीरों, बहुमूल्य और अर्ध-मूल्यवान पत्थरों, मोतियों और सिंथेटिक पत्थरों जिनका उपयोग स्टैंडिंग के रूप में किया गया हो, मूल्य पर 5 प्रतिशत अतिरिक्त सोना/प्लेटिनम और चांदी के अंश पर लिखी गई कीमत के अतिरिक्त मूल्य पर 0.5 प्रतिशत अतिरिक्त मूल्य संयोजन प्राप्त करने की भी आवश्यकता है।

कम तराशे और पालिश किए गए हीरों और बहुमूल्य अर्धमूल्यवान पत्थरों का निर्यात करने वाली यूनिटों के लिए न्यूनतम मूल्य संयोजन को घरेलू टैरिफ क्षेत्र से ऐसे निर्यातों के लिए उपलब्ध इसी अवधि की प्रतिपूर्ति दरों के आधार पर संगणित किया जाएगा।

आगान हेतु स्वीकृत आभूषण नमूने समुचित जांच के बाद पुनः निर्यात किए जा सकते हैं।

इस अध्याय के पैरा 85 के अनुसार संबंधित निर्यात संशोधन करने/निर्यात अभिमुख यूनिट के विकास आयुक्त द्वारा अपरिष्कृत हीरों के पुनः निर्यात की अनुमति दी जा सकती है।

आंशिक रूप से संसाधित आभूषण का निर्यात भी निर्धारित न्यूनतम मूल्य संयोजन को बसूली की शर्त के अधीन किया जा सकता है।

च. मूल्य आधारित स्कीम : सादे सोने के आभूषण के निर्यात के मुद्दे विदेशी मुद्रा में निर्यात की बसूली की प्राप्ति की प्रतीक्षा किए बिना लाइसेंसिंग प्राधिकारी निम्नलिखित के सीधे आयात के लिए निर्यात के पोत पर्यन्त निःशुल्क मूल्य 87 प्रतिशत के हस्तांतरणीय प्रतिपूर्ति लाइसेंस जारी कर सकता है :

- (1) सोना जो 0.995 से कम शुद्धता का न हो ;
- (2) 0.920 शुद्धता तक गोल्ड फाइन्स/माउन्टिंग्स/सोल्डर्स लाइसेंस के मूल्य के 10% तक जो कि लाइसेंस के समग्र मूल्य के भीतर हो ; और
- (3) रफ डायमंड्स, रफ कलर्ड जेम्स, स्टोन्स और रियल या कलचर्ड पर्स अनड्रिल्ड/अनसेट अवशेष मूल्य के लिए।

लाइसेंसिंग प्राधिकारी जड़ित सोने के आभूषणों के निर्यात के मुद्दे निर्यात बसूली की प्राप्ति की प्रतीक्षा किए बिना निर्यातों के पोत पर्यन्त निःशुल्क मूल्य के 80% के हस्तांतरणीय प्रतिपूर्ति लाइसेंस निम्नलिखित के सीधे आयात के लिए जारी कर सकते हैं—

- (1) सोना जो 0.995 कम शुद्धता का न हो, इसका मूल्य निर्यातित स्वर्ण जड़ित आभूषणों में उपयोग किए गए शुद्ध सोने (0.999 शुद्धता) की मात्रा को ध्यान में रखते हुए सीमाशुल्क प्राधिकारियों

द्वारा यथाप्रमाणित सीमाशुल्क साक्ष्यांकित बीजक में दर्शाए गए शुद्ध सोने (0.999 शुद्धता) के अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य द्वारा गुणा करके तथा जड़ितों के 20% अपशेष प्रतिपूर्ति मूल्य को जोड़कर तय किया जाएगा,

टिप्पणी : सोने का अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य भारतीय स्टेट बैंक की नामित शाखा द्वारा यथा प्रमाणित होगा।

- (2) स्वर्ण फाइन्सिंग/माउन्टिंग्स/सोल्डर्स 0.920 शुद्धता तक लाइसेंस के मूल्य के 10% तक और लाइसेंस के समग्र मूल्य के भीतर, और
- (3) रफ डायमंड्स, रफ कलर्ड जेम्स्टोन्स और रियल या कलचर्ड पर्स अनड्रिल्ड/अनसेट अपशेष मूल्य के लिए।

इस प्रयोजन के लिए निर्यातक निम्नलिखित दस्तावेजों के साथ लाइसेंस जारी करने के लिए आवेदन प्रस्तुत करेगा:—

- (1) सीमाशुल्क साक्ष्यांकित बीजक
- (2) सीमाशुल्क प्रमाणीकृत शिपिंग बिल, और
- (3) निर्यात के जहाज पर्यन्त निःशुल्क मूल्य के बारे में नोजनल/एक्यूअल घोषणा जैसा भी मामला हो।

मुक्त विदेशी मुद्रा के बिक्री की पूर्ण बसूली के बाद निर्यातक बसूली के बाद निर्यातक बसूली के बैंक प्रमाणपत्र के साथ अवशेष हस्तांतरणीय प्रतिपूर्ति लाइसेंस जारी करने के लिए, यदि कोई हो, आवेदन करेगा। यदि देय हो तो अधिक हकदारी के लिए एक लाइसेंस जारी किया जाएगा अन्यथा, जारी लाइसेंस का मूल्य प्रश्नान्वित निर्यात के मुद्दे समायोजित हो जाएगा। यदि समायोजन पूरा नहीं है तो शेष मूल्य उसकी भविष्य की हकदारी से समायोजित किया जाएगा।

प्रतिपूर्ति लाइसेंस जारी होने की तारीख से 12 महीनों की अवधि के लिए वैध होगा। इस मामले में अपशेष मान-दण्ड लागू नहीं है।"

(3) पैराग्राफ 91 निम्नलिखित द्वारा प्रतिस्थापित होगा:—

"91. जिन मामलों में निर्यातक न्यूनतम निर्धारित मूल्य संयोजन प्राप्त कर लेता है उसमें सादे सोने/चांदी के आभूषणों के निर्यात पर उपयुक्त पैरा 88 (क) से (घ) में उल्लिखित योजनाओं के तहत प्रतिपूर्ति लाइसेंस जारी किए जा सकते हैं। ऐसे लाइसेंस का मूल्य न्यूनतम मूल्य संयोजन से अधिक बसूली के सन्दर्भ में तय किया जाएगा। जड़ित सोने/चांदी/प्लेटिनम आभूषणों और वस्तुओं के निर्यातक छीजन सहित सोने/चांदी/प्लेटिनम पर मूल्य संयोजन गिनने के बाद निर्यातित मदों में उपयोग किए गए स्टैंडिंग के मूल्य को ध्यान में रखते हुए रस्त प्रतिपूर्ति लाइसेंस के हकदार

होंगे लाइसेंसिंग के प्रयोजन के लिए स्टॉक  
चार श्रेणियों में विभाजित किए जाएंगे नामशः—

- (क) हीरे
- (ख) बहुमूल्य पत्थर
- (ग) अर्द्ध-बहुमूल्य और कृत्रिम पत्थर और क्यूबिक  
जिरकोनिया और
- (घ) मोती

प्रतिपूर्ति की माला प्रक्रिया पुस्तक में दी गई अनुसार होगी। यह लाइसेंस अपरिष्कृत हीरों, बहुमूल्य पत्थरों, अर्द्ध-बहुमूल्य और कृत्रिम पत्थरों और मोतियों के आयात के लिए वैध होगी। इसके अतिरिक्त यह लाइसेंस के मूल्य के 5% तक खाली जेवेलरी बाक्सों के आयात के लिए वैध होंगे। यह लाइसेंस मुक्त रूप से हस्तांतरणीय होंगे।

निर्यातकों को वास्तविक उपयोक्ता शर्त के बिना जड़ित सोने/चांदी/प्लेटिनम आभूषण के मद्दे जारी रत्न प्रतिपूर्ति लाइसेंस के लागत-सीमा भाड़ा मूल्य के 10% तक एमराल्ड्स के अलावा कटे हुए और पालिश किए हुए बहुमूल्य/अर्द्ध बहुमूल्य पत्थरों के आयात की अनुमति होगी।”

2. इसे लोकहित में जारी किया जाता है।

[फाइल नं. 3/201/95-आई. पी. सी-II]

रामल घोष, महानिदेशक, विदेश व्यापार और  
पदेन अपर सचिव

## MINISTRY OF COMMERCE

NOTIFICATION NO. 12 (RE-95)/92—97

New Delhi, the 1st December, 1995

S.O. 948(E).—In exercise of the powers conferred by section 5 of the Foreign Trade (Development and Regulation) Act, 1992, (No. 22 of 1992), the Central Government hereby makes the following amendments in Chapter VIII of Export and Import Policy, 1992—97 (Revised Edition : March, 1995) namely :—

- (i) After paragraph 79, the following new paragraph shall be added :—

79A. “Diamond Credit Book Scheme.—A Diamond Credit Book Scheme shall be available for some categories of exporters of cut and Polished diamonds. The Scheme shall be voluntary. Exporters who are regular DTC sight holders or those having a minimum export performance of 3 years with an average export turnover of Rs. 3 crores during the preceding 3 years in cut and polished diamonds

are eligible to utilise the Scheme. Such exporters may apply to the designated authority in the prescribed form for issue of a Credit Book. The designated authority may, after considering such matters as may be specified, issue a Credit Book to the applicant.

The Director-General of Foreign Trade shall appoint a designated authority, being an officer of the rank not less than a Deputy Director General in each of the Customs Houses at Delhi, Bombay, Calcutta and Madras and such other Customs Houses as may be specified by him in this behalf. The designated authority shall be the competent authority in respect of matters concerning the Credit Book Scheme and shall discharge his functions under the overall direction and supervision of the Collector of Customs.

Upon export and production of Customs attested copy of invoice and without waiting for realisation of export proceeds of cut and polished diamonds, the designated authority shall determine the entitlement for import on the basis of replenishment rates indicated in Appendix-I and make necessary credit entries in the Credit Book. These credit will be transferable among the holders of similar Credit Books for the import of goods as per Appendix-I and the designated authority shall make the necessary debit/credit entries in the Credit Book. The import and export shall be made through the same port. The Credit Book shall be valid for a period of 6 months from the date of issue and on expiry of the validity of the Credit Book, any balance lying to the credit of the exporters will be allowed to be carried forward to next Credit Book.”

- (ii) Paragraph 88 alongwith its marginal title shall be substituted by the following :—

88. “General.—The value addition will be calculated with reference to the value of gold/platinum and silver content (including wastages). The minimum value addition for plain gold/platinum jewellery and articles will be 10 per cent, studded gold/platinum jewellery and articles 15 per cent and silver jewellery and articles 25 per cent.

A. Manufacture and export of jewellery against gold/silver supplied by the foreign buyer through

MMTC, HHEC or any other public sector agency nominated by the Government of India :

In cases where the export orders are placed on MMTC/HHEC or any other agency nominated by the Government of India, by a foreign buyer, the foreign buyer may supply, in advance, gold or silver, free of charge, for manufacture and ultimate export of gold and silver jewellery and articles thereof. Alloys, findings and mountings of silver and gold of 18 carats and below may also be supplied. The exports may be made by MMTC/HHEC or any other nominated agency directly or through their associates. The import and export of mountings and findings shall be on net to net basis.

**B. Export for display/sale at exhibitions :—Gem & Jewellery EPC, HHEC and MMTC and their associates may export gold/platinum/silver jewellery and articles for holding exhibitions abroad. Any other person/firm/company may also be allowed to export under this provision after obtaining the approval of the Gem & Jewellery EPC. The above exports shall be subject to the following conditions :**

- (i) Items not sold abroad shall be re-imported within 45 days of the close of the exhibitions; and
- (ii) The gold/platinum and silver content on items sold in such exhibitions shall be imported as replenishment not later than 60 days after the close of the exhibition.

An EOU/EPZ unit may also participate in exhibitions in India/abroad. No sale, however, shall be permitted in exhibitions held in the country. The procedure for movement of the jewellery from these units and back shall be prescribed by the customs authorities.

**C. Gold/silver/platinum jewellery and articles Export Promotion and Replenishment Scheme :** The exporter may obtain the gold/silver from SBI/MMTC/HHEC in advance or as replenishment after exports. In respect of platinum jewellery and articles MMTC alone will be the nominated agency for import and supply of platinum of upto 0.9999 fineness for supply to jewellery exporters.

**D. Advance Licence :** A quantity based Advance Licence may be granted for the duty free import of :

- (i) gold, mountings, sockets, frames and findings of 18 carats and below; and
- (ii) silver, mountings, sockets, frames and findings against export of gold and silver jewellery and articles. The export obligation will be required to be fulfilled within 120 days from the date of import against a particular licence.

**E. Exports from EPZs/EOUs :** The General provisions in Chapter IX of the Policy will be applicable to gem and jewellery EOUs and EPZ Units except that :

- (i) nothing including rejects shall be permitted to be sold in the Domestic Tariff Area (DTA); and
- (ii) in the event of a unit ceasing its operation, gold and other precious metals, alloys, gems and other materials available for manufacture of jewellery, shall be handed over to an agency nominated by the Ministry of Commerce at the price to be determined by that agency.

These units may import raw-materials, alloys, carat gold, coloured gold, precious metals including silver, platinum of upto 0.90 fineness, palladium, findings, mountings, sockets and frames made of gold and other precious metals. These units may also import diamonds, coloured gems and stones, semi-precious stones, synthetic stones, pearls etc. In addition, gold of fineness not less than 0.995 may also be made available to these units through SBI or any other agency nominated by the Ministry of Commerce. The units may apply through the Development Commissioner of the EPZ/EOU or, in the case of any EOU complex the sponsoring authority, if any, for supply of gold of fineness not less than 0.995.

An exporter shall also be required to achieve an additional value addition of 5 per cent over the value of cut and polished diamonds, precious and semi-precious stones, pearls and synthetic stones used as studdings over and above the value addition prescribed on the gold/platinum and silver content.

The minimum value addition for units exporting loose cut and polished diamonds and precious and semi-precious stones shall be calculated on the basis of the corresponding replenishment rates available to such exports from DTA.

Jewellery samples allowed to be imported may be re-exported after proper identification.

Re-export of rough diamonds may be allowed by the Development Commissioner of the EPZ/EOU concerned in accordance with paragraph 85 of this Chapter.

Partly processed jewellery may also be exported subject to realisation of the prescribed minimum value addition.

**F. Value Based Scheme :** Against exports of plain gold jewellery and without waiting for realisation of export proceeds in foreign exchange, the licensing authority may issue a transferable

Replenishment Licence @ 87 per cent of the FOB value of exports for direct import of :

- (i) gold of fineness not less than 0.995;
- (ii) gold findings|mountings| Solders upto 9.920 fineness upto 10 per cent of the value of the licence which shall, however, be within the overall value of licence;
- (iii) rough diamonds, rough coloured gemstones and real or cultured pearls undrilled|unset for the residual value.

The licensing authority may issue a transferable Replenishment licence @ 80 % of the FOB value of exports against export of studded gold jewellery without waiting for realisation of export proceeds for the direct import of :

- (i) gold of not less than 0.995 fineness, the value of which shall be determined by taking into account the quantity of pure gold (0.999 fineness) used in the gold studded jewellery exported, as certified by the Customs authority, multiplied by the international price of pure gold (0.999 fineness) as shown in the Customs attested invoice, plus 20 per cent of the residual replenishment value of the studdings ;

**Note :** The international price of gold shall be the price as certified by designated branch of SBI.

- (ii) Gold findings|mountings|solders upto 0.920 fineness upto 10 per cent of the value of the licence and within the overall value of the licence; and
- (iii) Rough diamonds, rough coloured gemstones and real or cultured pearls undrilled|unset for the residual value.

For this purpose, the exporter shall submit an application for issue of the licence alongwith following documents :—

- (i) Customs attested invoice;
- (ii) Customs authenticated Shipping Bills; and

- (iii) A declaration about the notional|actual FOB of exports as the case may be.

After full realisation of sale proceeds in free foreign exchange, the exporter shall apply for issue of residual transferable Replenishment Licence, if any, along with the Bank Certificate of realisation. If due, a licence for the excess entitlement shall be issued. Otherwise, the value of the licence issued shall be adjusted against, the exports in question. In case the adjustment is not complete, the balance value shall be adjusted from his future entitlement.

The Replenishment Licence shall be valid for a period of 12 months from the date of its issue.

The wastage norms are not applicable in this case."

Paragraph 91 shall be substituted by the following:—

"91. Gem Replenishment Licences may be issued under the Schemes mentioned in Paragraphs 88(A) to (D) above on Export of plain gold|silver jewellery in cases where an exporter achieves the minimum prescribed value addition. The value of such licence shall be determined with reference to the realisation in excess of the minimum value addition. Exporters of studded gold|silver|platinum jewellery and articles may be entitled to Gem Replenishment Licence taking into account the value of studdings used in items exported, after accounting for the value addition on gold|silver|platinum including wastages. For the purpose of licensing, the studdings will be divided into four categories, namely:—

- (a) diamonds,
- (b) precious stones,
- (c) semi-precious and synthetic stones and cubic zirconia, and
- (d) Pearls.

The scale of replenishment will be as contained in the Hand-Book of Procedures. These licences shall be valid for import of rough diamonds, precious stones, semi-

precious and synthetic stones and pearls. Besides the licence shall also be valid for import of empty jewellery boxes upto 5 per cent of the value of the licence. These licences shall be freely transferable.

nishment Licence issued against export of studded gold|silver|platinum jewellery and articles without actual user condition."

This issues in public interest.

The exporters may be allowed to import cut and polished precious|semi-precious stones other than emeralds upto 10 per cent of the c.i.f. value of Gem Reple-

[F. No. 3|201|95-IPC-II]

SHYAMAL GHOSH, Director General of Foreign Trade and Ex-officio, Additional Secretary to the Govt. of India

